दिनांक : .१२.२०१९

प्रति,

माननीय राज्यपाल,

आंध्र प्रदेश

विषय : भाषारक्षा हेतु १ली से ६ठी कक्षा के छात्रें को
अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने की घोषणा रद्द करने के संदर्भ में ....

महोदय,

भाषा धर्म एवं संस्कृति एक पीढी से दूसरी पीढी की ओर संक्रमित करनेवाला एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है । आंध्र प्रदेश सरकार ने पहली से छठी कक्षातक के विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा देने की घोषणा की है । इस घोषणा के कारण राज्य के छात्रों को उनके बचपन से ही भारतीय भाषा से दूर लेकर इन छात्रों की भारतीय संस्कृति के साथ जोड को तोडने का प्रयास किया जा रहा है । वास्तव में तेलुगु इस राज्य की पहली भाषा है और इस भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन का दायित्व राज्य सरकार का है । ऐसा होते हुए भी छात्रोंपर अंग्रेजी माध्यम को थोपना अनाकलनीय है ।

*** विश्वभर में भाषाविद और शिक्षाविदों द्वारा किए गए विविध अध्ययन यह दर्शाते हैं कि,**

१. मातृभाषा में मौलिक शिक्षा देने से छात्र अच्छी प्रगति करते हैं ।

२. मातृभाषा में शिक्षा देने से छात्रों का विद्यालयों से होनेवाली चुआई की मात्रा अल्प होती है ।

३. प्राथमिक शिक्षा अन्य विदेशी भाषा में देने से छात्र स्वभाषा और संस्कृति को भूल जाते हैं ।

४. दक्षिण कोरिया, जपान, जर्मनी, स्वीडन, रशिया, ब्राजील, चीन जैसे विकसित देशों में अंग्रेजी अवश्य पढाई जाती है; किंतु वहां की शिक्षा के माध्यम उनकी मातृभाषा ही है । इन सभी देशों ने विज्ञान में इतनी प्रगति की है कि भारत की भी उतनी वैज्ञानिक प्रगति नहीं हुई है । आज हम मानसिक गुलामी के कारण ही ऐसा मानने लगे हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चलेगा ।

५. उक्त सभी देशों की अर्थव्यवस्था भारत से अधिक सक्षम है । आज उनकी भाषाएं समृद्ध हुई हैं । इन भाषाओं में शिक्षा ग्रहण करनेवाले लोगों को अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में उनके प्रतिष्ठान अपने पैर जमाकर खडे हैं, यह ध्यान में आता है ।

६. मातृभाषा से मिलनेवाली शिक्षा छात्रों के अंतर्मनतक पहुंचती है, तो अन्य भाषा से मिलनेवाला ज्ञान केवल मस्तिष्क के स्तरपर ही रह जाता है । मातृभाषा में बोलनेवाले और लिखनेवाले बच्चों को अंग्रेजी अथवा अन्य विदेशी माध्यम से शिक्षा दी गई, तो उन्हें उसे ग्रहण करने में आकलन के स्तरपर कठिनाई होती है; क्योंकि पहले मिलनेवाले ज्ञान को मस्तिष्क को मातृभाषा में रूपांतरित करना पडता है और उसके पश्चात वह ग्रहण हो पाता है, यह शास्त्रीयदृष्टि से प्रमाणित हुआ है ।

७. भविष्य की उच्च शिक्षा के सुलभीकरण के लिए प्राथमिक स्तर से लेकर अंग्रेजी माध्यम का स्वीकार संयुक्तिक नहीं लगता; क्योंकि केवल १० से १२ प्रतिशत बच्चे ही उच्च शिक्षातक पहुंच सकते हैं । आज देशभर के अनेक वैज्ञानिक अथवा उच्चशिक्षित और गणमान्य व्यक्तियों की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में हुई है और उसके पश्चात उन्होंने अंग्रेजी भाषा में उच्च शिक्षा ग्रहण कर देश का नाम ऊंचा किया है ।

८. आज का युग संगणक का युग है; इसलिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना समय की मांग है; परंतु भले ही यह सच होते हुए भी संपूर्ण शिक्षा का माध्यम ही अंग्रेजी बनाना कितना उचित है ? उसके कारण ही दुर्भाग्यवश आज सरकार और अभिभावकों की यह मानसिकता बन गई है कि बच्चों की व्यावहारिक प्रगति हेतु अंग्रेजी ही अत्यावश्यक है ।

९. गांधीजी ने लॉर्ड मेकॉले द्वारा भारत में आरंभ की गई शिक्षाप्रणाली के संदर्भ में कहा था कि करोडों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में ढकेल देने जैसा है । मेकॉले ने शिक्षा की जो नींव रखी, वह सचमुच में गुलामी की नींव थी । बच्चे को मां के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और उससे जो मधुर शब्द सुनाई देते हैं, उनमें और विद्यालयीन शिक्षा को जो

सुयोग्य मेल होना चाहिए, वह मेल विदेशी भाषा में शिक्षा ग्रहण करने से टूट जाता है । हम ऐसी शिक्षा की बलि चढकर मातृद्रोह करते हैं ।

१०. रविंद्रनाथ टागोर ने भी मातृभाषा का बहुत आदर किया । उन्होंने कहा था कि मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है । जपान का आज जो विकास हुआ है, वह जपानी भाषा के कारण ही हुआ है । जपान ने मातृभाषा की क्षमता पर विश्वास किया और उन्हेंने जपानी भाषा को अंग्रेजी के प्रभाव से दूर रखा । जब जपानी लोग अमेरिका जाते हैं, तब भी वे वहां अपनी मातृभाषा में अर्थात जपानी भाषा में ही बोलते हैं ।

*** अतः इस परिप्रेक्ष्य में हम निम्नांकित मांगें कर रहे हैं ....**

१. आंध्र प्रदेश सरकार ने विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने के स्थानपर छात्रों को अच्छी सुविधाएं प्रदान करना, अभिभावकों का उद्‌बोधन कर उनमें मातृभाषा के प्रति विश्वास को जागृत करना आदि कार्य किए जाएं ।

२. तेलुगु भाषा के स्तर को टिकाए रखने हेतु, साथ ही स्वभाषा की रक्षा हेतु १ली से ६ठी कक्षातक के छात्रों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने की घोषणा रद्द की जाए ।

३. तेलुगु भाषा के संवर्धन हेतु सरकार 'तेलुगु ज्ञानपीठ' अथवा 'तेलुगु विद्यापीठ'की स्थापना कर छात्रों को उच्च शिक्षा दी जाए और उसी भाषा में विविध शोधनिबंधों का प्रस्तुतिकरण किया जाए ।

आपका विश्वासी,

संपर्क :